संवाद

आज के दौर में शिक्षा का महत्व बहुत अधिक है, क्योंकि यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जो शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर गहराई से असर डाल रहे हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022) और विद्यालयी शिक्षा के लिए बनी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) के तहत विद्यालयी शिक्षा में सुधारों के लिए कुछ प्रमुख कदम उठाए गए हैं, जो विशेष रूप से एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप हैं। इन सुधारों का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना, विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को बेहतर बनाना और उन्हें 21वीं सदी के कौशलों से युक्त करना है। एन.ई.पी. 2020 के अंतर्गत बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को आसान, सुलभ और रुचिकर बनाने के लिए न केवल साक्षरता और गणितीय क्षमता को मजबूत करने पर ध्यान दिया गया है, बल्कि बच्चों के सामाजिक, नैतिक और रचनात्मक कौशल को भी बढ़ावा देने की बात की गई है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 के तहत नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है। कक्षा 1 और 2 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी', अंग्रेजी की 'मृदंग', गणित की 'आनंदमयी गणित' तथा कक्षा 3 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा', अंग्रेजी की 'संतूर', गणित की 'गणित-मेला' और ई.वी.एस. जिसे अब 'हमारे आस-पास की दुनिया' कहा जा रहा है, उसके लिए किताब है 'हमारा अद्भूत संसार'। पहली बार रा.शै.अ.प्र.प. ने फिजिकल एजुकेशन एंड वेल-बींग के लिए पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया है और किताब का नाम है 'खेल योग'। इसी तरह कला-शिक्षा के लिए भी पहली बार किताब बनी है 'बाँसुरी'।

कक्षा 1–3 की किताबों में खेल आधारित और गतिविधि आधारित शिक्षण सामग्री को शामिल किया गया है, ताकि बच्चों के सीखने की प्रक्रिया मजेदार और प्रभावी हो और साथ ही बच्चों में साक्षरता और संख्या ज्ञान की दक्षता भी विकसित हो। किताबों का उद्देश्य केवल विषयवस्तु को सिखाना नहीं है, बल्कि बच्चों को जीवन के लिए तैयार करना है। इसमें शिक्षक-केंद्रित विधियों से हटकर, बाल-केंद्रित विधियों पर जोर दिया गया है। एन.ई.पी. 2020 में कहा गया है कि कठिन विषयों को आसान और मजेदार बनाकर बच्चों को सिखाना चाहिए। बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाए, तो वे बेहतर ढंग से समझ और सीख सकेंगे।

बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना विकसित की जानी चाहिए। सरकारी विद्यालयों में 'विद्या प्रवेश' और 'निपुण भारत मिशन' का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि बच्चे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य प्राप्त कर सकें। विद्यालयों में अब कला-शिक्षा पर भी बहुत जोर दिया जा रहा है, ताकि बच्चों की रचनात्मक क्षमता का विकास हो सके।

शिक्षा के क्षेत्र में सामुदायिक भागीदारी का भी विशेष महत्व है। सामुदायिक भागीदारी से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है और यह बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। 'बच्चों के साथ संवाद' भी सीखने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो बच्चों में रचनात्मकता, सीखने की क्षमता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है। बच्चों को समझने और उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए खुली बातचीत बहुत आवश्यक है। यह बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को उभारने में मदद करती है।

प्रस्तुत अंक में इन्हीं मुद्दों से जुड़े लेख शामिल हैं। शिक्षक, शोधार्थी और बच्चे रा.शै.अ.प्र.प. की नई किताबों को पढ़ रहे हैं और पुस्तकों में शामिल विषयवस्तु के माध्यम से ज्ञान अर्जित कर रहे हैं और वे विभिन्न माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। रा.शै.अ.प्र.प. की किताबें डिजिटल रूप से भी उपलब्ध हैं, और इन्हें रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

पत्रिका में विशेष के अंतर्गत 'गणित मेला' कक्षा 3 में शामिल 'पाठ्यपुस्तक के बारे में' को शामिल किया गया है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपका कोई सुझाव हो तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक